



ॐ नमः ४ प्राणायामाय ॥ धीगुन्ना नमः ॥ धीगुन्ना नमः ॥ कृष्णाय नमः ॥
 धीगुन्ना धीगुन्ना धीगुन्ना नमः ॥ नमः ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ १० ॥ यथा ॥
 बालानुसृत्य दक्षिणमुखी सधिया गिरि ॥ यत्किं दृष्टं ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥
 ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥
 ग ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ कातूकातूकवृत्ताददापादडासुखिदात्रिगधपात्रि
 गधमिमीमिकिसत्रिडा ॥ तुदिमा ॥ कृष्णाय नमः ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीमद्भगवत्पादयस्य ॥ नमः ॥ दयकसंगु ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 यिसत्रमिसत्र दृष्टायाहा यत्र ॥ १ ॥ लुडया ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 कासापातिना ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥
 ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥
 मायाया ॥ गउनिपावनिदाहा ॥ १ ॥ मीमासा ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ सस ॥ १ ॥
 मानादाता हंगनकदाहा ॥ १ ॥ यथा ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ सिरुतस्यामिरुत
 स्या ॥ ॐ दृष्टिदृष्ट्या यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥

आग लजाय ॥ सावद्रही संज्ञा गाय इति वेंगला (ग) लाया वहां की वा वा ॥ अलन
 विद्या सस्यान ह न ना ह न न वा इत्यलया अः क उ के ॥ ॥ कारे सां स्या सां
 ना सां ह लियो सां कं ग्या सां ॥ ॥ अल ग्या सा हा द वी वा वा ॥ अ ३ लिका
 यः विद्या दू तिसस्या प्रया अः गालन ॥ अथ मिखा सखा से के खति द ह सा सिग सा
 यत्र या हा न सां अ न टा दि हा अथ न ट ग का न नी ना यि डा इ ना ॥ ॥ प स पू न का
 न सा कय च क न मू क सिंधु तया डा दाय के ध्व क न न वू य त ह का न ना य इ ना प
 अथ मि सा हा अया ॥ न श्व ति क स्यां र्या ते वत ख घ न र्ज वा लि प ति ध्व क दि हा
 डा नू व ति दू त वि य न व मु स न ना डा हो य इ ना ॥ अथ मिखा स न कां न इ दे
 अया विधि न सा स्वा न या न न सां अ न र र य स दि हा अ मिखा स थ न ॥ दिन क स इ
 मि सा ता स इ इ या कु द ह या म म या ह का य क क या डा दि य स खि न वा ना या य इ

मिति मार्गः ॥ ॐ नमो सिवायः ॐ नमो गुन वधनमः ॐ नमो सरथ
 तिनमः जवा कुलु म सं का सं का स्य प्य यो मा हा दु ति न मो रि गं स
 र्व पा प घ्नं प्र हा मा मि दि वा करः ॥ मा कुं (धु) नु उषार हार ध्व व ला
 पा सु र व सुा वि ता पा वि धम व र द नु मं दि त क रा या खि प द्वा
 या व ह्मा चि त सं क र पु मि ति मि ति दे वे स या वं दि ता क्ख मा मां
 पा ठु सा र्था ति भ ग वा ति नि षे ष जा घा पा हा ॥ ४ ॥ वा क्वा दि नि जी ३ ना हा
 त्रि पुर सुं द ति

य २ सर्वा कृष्ण सर्व व्यापिनि कुं ईं स ४ मा हा मृत्पुसम विदा वं शुभा
सर्व द वं वानी नि कुं दुर्ज ल नि स्वा हा कीं सी कीं रं म हि षा इ
सूत्र मर्दिनी काल २ प काल २ जीव २ कीं व न द नं व न द २ श्री ४ वा ग्य
दिनि कीं नि त्वा न द हं सर्व ४ गू द ल नि डां श्रीं दुं वं क क वि षू न द व
न सदा वि वा सि के कां कीं हं हं हं हं ४ महा ष स न स चं धि के पू गां न ४ दा
मय २ डा वय २ मर्द २ काम कर्षि नि वं कीं सो वि पू न त व ल्य द त्म नि हं

ह १ न्य पु र्धु श्व रि शुं द प श्व ती त्रीं कृ डि क र्धु ग ग म रि का लि महा का
लि का लां क कि कीं हं रु द त ७ श्व रि द्या न वि वे प त्र मा न न्द वा कि
नो डि स्का दि ना ना य नि को न वा ह ३ नि को नि कि त र्चि के म हा त नि
म हा मा न म धु त व न न जा म यि मुं मुं मुं मुं मुं ४ का लि का नि नी नि
वि शु म २ जाम य २ वा स य २ श्व व क वि षू न प ज य २ महा वै जा सि स
वा सू न वि ना सि नि कुं हीं श्रीं कीं दुं कीं सीं हं रु द र व न न द य २ व म

न. न्वनिद्या न विच हं रुहं हूं कीं गा जप द धूमं उद्यत (धु) निगम
दिनि हं हं सदा न क २ त्वां मां हं स ४ मृत्यु हं न हं रुहं रुं नाम
द ४ किं हं न वानन्द की गा धिप न धं महा विद्या नो जं ध्वं नी
मूं ना जप द ना जमान ४ कां कीं कूं कूं कीं कूं ४ ये लो का कर्षि लि की
धु का मां गं डा वि लि नं मूं की महा का र का त्रि लि रगा व ती ड
य च (धु) धूमं अ धा नाम रि अ धा न न्वनि म म सर्व ४ कु म द्य य २

नाश धर्मं दहि आर्याषि व ड २ सर्व मूं ना ज य न न प क न २ प न प
न नं का रु य २ म म सि डि प य क २ स र्वा लि का र्या लि सा ध य २ य सी
द २ कीं कीं हं धूमं नं कीं गीं कीं उद्यत (धु) महा य न ना का न धा त्रि लि
सर्व म ४ धु क र्यं क रि शीं धीं धीं शीं कीं हं मूं हं रुं धुं धुं
रुहं ज न म ४ स्वा हा ॥ ॥ न्वनि रि मा न नु का उद्यत धु स ४ ह
मा क रि प र्धु ॥ ज दि धु धं म स र्धं ताम म दा धा ना दि य ता जा डि रि रि

१॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ श्रीमन्निपुनसुन्दर्यायायाविद्या
सुदर्शलाः ॥ कृपया कथितं ^{मन्त्रा} सर्वाभूताश्च भिन्ननामयाः ॥ प्राक्षनाथ
धनाबृहिकवचं मनुविग्रहं ॥ ऐलोक्ता हननं निनामकः ॥ कथितं
पूना ॥ ॐ दानी ॥ अनुमिकामि सर्वार्थकवचस्य च ॥ ॐ स्वर्गोवाच ॥ गृ
धुदेविप्रवक्तुमिह सुन्दरिप्राप्तवत्सरे ॥ ऐलोक्ता हननं नाम महाविद्या
यविग्रहं ॥ यः धृष्टादानवान् विस्मृतिर्जघांस हर्महः ॥ हृष्टिवितनूने

वंशायत्कृत्वा पठनाद्यतः ॥ सहर्ता हयना देविदेवं ॥ अवा सर्वायतः ॥
धनाधिपः कवनापियतः सर्वदिगीश्वरः ॥ न देयं यत्र निष्ठा दै
यनिष्ठा त्ववहि ॥ नृकं एापि पूर्वया दत्ता मृदुमवा प्रया ॥ श्री
मन्निपुनसुन्दर्या कवचस्य अपिः निवः ॥ कन्दो विगाट दवता च द
वीतिपुनसुन्दरी ॥ धर्मार्थकाममादृष्टविनियोगः प्रकीर्तितः ॥ नि
नामेवाग्रवेषपातुर्गुणैस्त्रयकां ॥ पूर्णतलाटपञ्चपातुका मन्त्रना
दिमदीद ॥ नोपा ॥ हे रामे काममलुधमः ॥ पूर्णमूर्तिपातुमाहा

सो राग्यदायिनी मूर्ति सकि वीरुं पातु जिह्वां च यंच मी ॥ वदन सकलं पा
 न्यं वदुं सु स ऊं वदा ॥ कीं पातुं सा पातु कामं न्यनी मम ॥ मूर्ति कं
 ०. पातु न्य प्रो वती मम । मूर्ति न कि वीरुं स्कंधे पातु पना मूर्ति
 का ॥ कामे नो पासि ताद ऊं कै वी कं ० दं सदा वगु । कामादि धा
 उभी पातु रजो पि पून सुन्दरी । तानादि धा उभी पातु कनो न मादि
 धा उभी । मायादि का हृद पातु सु नो वर्गादि धा उभी । पातु पनादि
 का पातु घाटां थी सुन्दरी मम । मूर्ति पातु पदं मूर्ति सदा । कदिं पातु

सदा वगु ५

कामनाजः मूर्ति सदा वगु । ला पायं च दमिदं वी मध्याद नं च न कुरु । मूर्ति
 नारि पातु ऊं कीं कांटी पातु सकलि नीव मी सदा । पातु सामे न
 नाना ध्य सुन्दरी नी मां सदा वगु । मी नं पूरुं यं मं सदा वगु । मूर्ति
 गृह्यं पाया न मूर्ति । जाननी की सुन्दरी नी पातु च नु नाना धि
 नाच मां । मूर्ति न न जं धाय मं मूर्ति । मूर्ति गृह्य मं सदा वगु । मूर्ति
 पाद पाया मूर्ति पि पू न सुन्दरी ॥ कव न नाना धिता सर्वां गं सा
 सदा वगु ॥ मूर्ति जं धाय सदा मां प नु नि न कुरु ॥ मूर्ति कामा मा

आसावीजाषाठनी यना। सर्वांगमसदायाउन्नीमन्निपूनसुन्दरी
मासायानमावालासि कृषस्त्री लंगां कृष्णी काली काम केली कर्चः म
वीधोपलवप्रिये॥ श्रीमहाषाठनी पूर्वविख्याता एव न प्रय। ज्ञानेन
मुख्यहासां निवस्था सर्वना वदु। ॐ निते कवचं द विव श्र विद्या कल वन
पैला कमाहननाम कवचं व श्र निर्मिता। सफल द्रुमाहा विद्यां सुग्राह्य
कथिताः प्रिये। तासां सानात् सानना जापि विद्याः सुप्रसिद्धाः। व
हना किमिहा कन श्रीमहाषाठनी यना। प्रकाशिता महादेवि याप

शतपूतः पूतः। महाविद्यामयं व श्र कवचं व श्र मूखादिनं। गुरुमत्यर्च
विधिवत् कवचप्रप (० ननः) प्रिः सकृदा यथा ज्ञानं सापि पूज्य वनां
वनः। दामिकः सर्वविद्या श्र पाषिका नी जयादिषु। देवीमत्यर्च विधि
वत्पूज्यया समाचरन्। श्रुष्टा रुन ननं उष्टा दम्भं गह वनादि कान
न सुसिद्ध कवच पूज्यात्मा मेदनी यमः। मनुसिद्धि रवे रुस्प पून
थ यया विना ननः॥ गद्यपद्यमयी वाधी नस्प वक्रासु जायते। वक्रैत
स्प वल्गु दाधी कमलो निम्बला गृह। पूषा जलपृ कंद वी मूलं ननं

प० न स क न । अ पि न र्ब स ह स्रा ॥ प र्श या ॥ ह त मा प्र या न । आ ल्मा नं न
 म यं क ल्या य ॥ प० क व च नं ॥ यो य ॥ प न्ध ति नं गी द्यु स स दा ॥ ॥ र व
 कु वं । वि लि ष्य र्थ्य गृ टि कां स्व र्ण स्था भ न य द्य दि ॥ क० वो दा द्वे । ध वा
 हो स क र्पा दा स व ऊ ग न । पि लो की दा र्थ भ व ये ला क्क वि ज यी र व
 न । ग का प्रं पा य न्ना कु लि वे ष्मा कु दि नि पा र्वा गी । मा ल्या नि क्क सु मां न्य व
 सु ख दा नि र वं ति हि ॥ स्पर्श मृ द्य य र व न ल क्की वा णी व स क न ॥ ॥ दं क
 व च म स्त्रा वा यो ऊ प सुं द नी प नां ॥ न व ल क्प ऊ प्रा पि न स्प वि श्रा नो ति ह्य

ति ॥ स स सु पा न मा प्रा ति द नी डा म न्मा प्र या न् ॥ ॥ ॥ नि श्री न्द जा म स द
 वी ॥ न स वा दे वे ला क्क मा ह नं ना म व च चं स मा फ ॥ ॥
 कुं ॥ अः पि न य स म ह न की ना दा र्ध व सी र व गृ ह ना र्ध ॥ ॥ ॥ क र्प ना हि न्या सहि त प्र ण ॥ ॥ ॥

कंसके वामन हरिरामन ~~ह~~ मथुरा दवेसं द्वा रे दान

स्व १ स्व २
५११
कायपुर

श्री ३ स्वस्त्य देवता वल लक्ष्म स्व ५

श्री कृष्ण जी साहाय
श्री योगामान

श्री स्वामी सादेवता
प्रियं का

प्राधात व का एण एण नर



ज्ञानादिना ॥ अरुमा ॥ ॐ ऊँ फू ॥ प्राप्तायाम ॥ मृत्युं कथयन्मास ॥
 ज्ञानानाथनहाय ॥ अपवितापविता ॥ चासर्वावस्थांगतापिवा
 यस्मात्तत्पुत्रीकाकृतं सवाद्यात्मकं त्रैलोक्यं ॥ ५ पत्रपा ॥ मृत्युं
 जयगमयति ॥ १०८ ॥ काखाय ॥ यही पवितापत्रमपवी
 तं पञ्चापतयः सहस्रं पूनका ॥ आयुषानुगुणं पुतिमवउ
 पुं यद्वापवि नवलममुत ॥ गण्यते ॥ ईवा ॥ पुरा
 सतायनम ॥ मनिपू गापनम २ ०० ॥ डादिलोकनाथाय नमः

विद्याय नमः २ रूपसनायामम २ यदुत्थाः २ गद्यवृत्तः २
 उक्तिनयनाम २ पिप्पलधियातम २ गुच्छकथा २ लिङ्ग २
 ॐ रक्तस्था २ गितपतयेतम २ नव २ विष्णुनाम २ शमेश २
 कर्णमक नराक नाथनम २ उं वृक्षतनम २ गाननयनम
 ०० ॥ दवतायेनम २ पृथिवीनम २ यागवायनम २ गुनचनम २ नमः ॥

क्रिदीजा
 कुर पुरोसं वरुनावना कि

आ ॥ ३५२
 1. 342
 ASHA ARCHIVES

अथ स्नान विधि ॥ ॥ रुक्मपादो मुखं प्रक्षाल्य दिकं कुर्यात् ॥ ॥ त्रावेमं ॥ ॥
वन्दनं ॥ ॥ हिरवा नाथ यविदमरुख रुन्दा यधिमहि न न्ना ॥ ॥ निवंप्रचोदयात् ॥ ॥ अना
लं व न हाय ॥ ॥ अथ यिषा यविता वासवं विष्ठां गता विता ॥ ॥ यस्मिन् तून्मनी को दं सर्वा
आत्वं न न स वि ॥ ॥ ज्ञाना गधि क्रिय ॥ ॥ मत्सं जय वा मूल म क्रुन ॥ ॥ ॐ इ स ४ अ म ती ण य वि
द म म ल ज्ञ या य धी म हि न न्नी ४ न गु प्र वा द या त् ॥ ७ ॥ त्स्व न हाय ॥ ॐ इ रु द या य न म ४ ॥
इ नि त म स्वा हा ॥ इ नि स्वा य व ष ट् ॥ इ क व वा य द् ॥ इ न गु प्र या य व ष ४ ॥ इ अ म्ना य
रु द् ॥ त्स्व न न ॥ ॐ व द्म र्ध न म ॥ ॐ विष्णु व न म २ ॥ ॐ न डा य न म २ ॥ ॐ ॐ ॐ द व ना य

न म २ ४ ॥ ॐ ति स्नान विधि ॥ ॥ अथ स आ विधि न म ४ ॥ ॥ ॐ इ अ म्ना य
य स्वा हा ॥ ॐ इ वि या त स्वा य स्वा हा ॥ ॐ इ नि व न स्वा य स्वा हा ॥ क न न्या स ४ ॥ ॐ इ रु द् अ न
क म क य अ म्ना य रु द् ॥ ४ ॥ ॐ इ स ४ स र्व रु ता य रु द या य न म ४ ॥ ॐ इ यामा धि य न य
नि त म स्वा हा ॥ ॐ इ अ ना दि वा ध नि स्वा य व ष ट् ॥ ॐ स्व न रु क व वा य द् ॥ ॐ इ अ म्ना य
न गु प्र या य व ष ट् ॥ ॐ इ रु द् अ न क म क य अ म्ना य रु द् ॥ उ वं क न न्या स ४ ॥ क म्ना स र्वा
थ न ॥ ॐ रु द या दि नं ज य न यं ॐ का न व धा न १० ॥ आ वा ह ना दि ध न म्ना य म स्वा म्ना य
द र्म य तु ॥ क म्ना य न हा य ॥ ॐ रु द या दि नं ॥ आ म्ना य म ॥ ॐ इ ॐ ॐ यो रु द् ॥ १२ ॥ १३ ॥

॥१०॥ व न क क क क न च क ॥ रु वी आ च म ॥ ध्यानं ॥ न क रु वा व न न क ज दाय ह्य प वि
मिनी हं स प द्मा स ना वा ता च उ र्व कां च उ रु र्जा ॥ धृ ग क मा तिका द क वा म द धु क म धु
तं ॥ वा क्षी म रु द र्ण ध्या यो या ग स्त न क व रु कां ॥ ष अ ला स त ख थ न द द या दि न ॥ कुं का
न न ज य न पा १० ॥ ति ग म डी द र्ण य ग ॥ द द या दि न ह्य य ॥ निर्म च न या य कुं रं रु द
न क र्ण क य म रु य रु द ॥ म ऊ ति व धा सूर्य न म स्का नं क र्था ७ ॥ ज य ॥ कुं रं स ४ म रु ती
भा य वि द्म रु म रु य ज या य धि म हि त न्ना ४ न य प्र वा द या ७ ॥ १० ॥ सर्व या य क य का म ना
र्य ४ म रु य न म ४ ॥ ध न धू न का ग त ख न न ॥ आ दि यं च नि व वि या च्छि व मा दि य नू पि ण ॥

उ रु या न क न नी ति आ दि य स नि व ल्य च ॥ या इ कां स न म स्का नं क र्था ॥ न र्थ ण ॥ कुं रं स ४ सर्व य
न क रु य ४ स्था ॥ ३ ॥ रु द ४ सर्व य म वि ला ला हा ४ ॥ कुं रं स ४ सर्व य द धु य ला ला हा ४ ॥ कुं रं स ४
सर्व य म नू य म ला हा ४ ॥ कुं रं स ४ सर्व य रु न ला व रु द ४ ॥ कुं रं स ४ सर्व य पि ल्य ४
स्व धा ४ ॥ कुं २ ४ सर्व य ४ पि ना म रु य ४ स्वा धा ॥ कुं रं स ४ सर्व य ४ य पि ना म रु य ४ २ ॥ कुं २ ४ सर्व य ४
मा रु य ४ २ ॥ कुं २ ४ सर्व य ४ पि ना म हि ल्य ४ स्वा धा ॥ कुं रं स ४ सर्व य पि ना म हि ल्य ४ २ स्वा धा ॥ कुं रं
स ४ सर्व ना मा म हि ल्य ४ २ ॥ कुं २ ४ सर्व य मा मा म रु द य मा मा म रु य ४ २ स्वा धा ॥ कुं रं स ४ स
र्व य म हि ल्य ४ स्वा धा ॥ ॥ गि या ऊ ति ॥ कुं रं स ४ श्री सूर्य य न म ४ ॥ ३ ॥ कुं रं स ४ स्वा का य न म ४ ॥

ॐ हं स ४ अ म गी न म ह ले न वा य न म ४ ॥ ३ ॥ ॐ हं स ४ म ग सं जी वि न्ये २ ४ ॥ ॐ हं अ धा न जां थ
 धा न जी धा न धा न त न कू रु स र्वे न ४ स र्वे स र्वे जां हं स ४ जां न द न प रु ४ धा
 नि खा त्व च्छ न म ह ले न वा य स दा नि वा य न म ४ ॥ ३ ॥ ॐ हं अ धा न धा न गी न कि स हि ता य
 न म ४ ॥ अ च म्य ॥ आ स लि का य ॥ ॐ हं स ४ स र्वे ह्य ता य रु द या य न न म ४ ॥ ॐ हं रु द् अ
 न न म क यं अ म्ना य रु द् ॥ स धा न म्ना क न ॥ ॐ नि स म्ना वि धि ॥ ॥ अ धा नि गी र्
 न वि धि ॥ ॥ क म य वा न य ४ ॥ ने व य य वा न य ४ ॥ अ ध म र्थ य जा ॥ जि त रोज
 च म्य न ॥ ॐ हं अ स न त्वा य स्वा हा ॥ ॐ हं वि या न त्वा य स्वा हा ॥ ॐ हं नि व न त्वा य स्वा हा ॥

॥ आ स ॥ नं अ म्ना य रु द् ४ ॥ अं अ गु ष्ठा य २ न म ॥ अ क्का य त र्जु ना य २ न म ॥ ह रु व ह ति
 न म ध्वा मा य २ न म ॥ हं अ ना ति का य २ न म ॥ रा क नि ष्ठि का य २ न म ॥ नं क न त त क त
 प ष्ठा य २ न म ॥ उ वं ह द या दि ॥ न न व न्ना स क म न रु त या न य जा ॥ आ वा ह ना दि क
 म ल म्ना द र्श न ॥ आ स न स च य ७ ॥ आ स न च न न न म ४ ॥ आ स न सि न स य न म २ ॥
 आ स न ना य २ न म ॥ आ स न र्थ २ न म ॥ आ स न ॥ जि या अ ति ॥ ॐ हं हं स ४ धा स र्था य
 न म ४ ॥ ३ ॥ ॐ हं ख खो त का य न म ॥ स्वा न ॥ ॐ हं हं स ४ धा स र्था य च न न क त प र्थ
 ध यं दी र्थ ने व यं न म ४ ॥ ऊ यं ॥ ऊं स्वा हा ॥ १० ॥ ऊ य स म र्थ स म धु लं कि वा च्छ वा १ ॥ ऊ यं ॥

ॐ नमः श्री सूर्याय दवाय नमः ॥ ऊ मा नातिर क मा हव निव द धत ॥ सा लु सि नून
 लत्रका ॥ ४ ॥ तिष्ठे त्रिवाये नूदय निन ट गी धा उ धा ना द व स्य न आर्या क्पा उ त्प का लं क म स त व
 न नू अ वा नू धा वा विरू ये स र्या स क्पा स य ना उ व न न नि नि वां रान वा रान न वि या ॥ ४ ॥ श्री
 सूर्या च ॥ वि धि रु स र्व य त्रि प र्णु म सु ॥ ॐ ति श्री सूर्या पि जा ॥ ॥ अथ श्री गद्य यति पूजा ॥
 अथ श्री गद्य यति पूजा ॥ ग अ क्रु यं रु ट् ॥ गिया ॥ ३ ॥ ति ॥ ॐ गानि नू ह न वा य न म ॥ ३ ॥ स्तान ॥ ॐ गानि नू
 ह न म्वा य च नू ना क न य र्ण धू यं दा यं ॐ द नै व यं न म ॥ ४ ॥ जयं ॥ गं स्था हा ॥ स्था र्ण ॥ ॐ न म्
 ह न म्वा य द वा य न मः ॥ ॐ गे न अ क्पा रान ति य श्व व द न ॥ ४ ॥ ति रु स्था मा क र्ण धा पा न म

धन त ह क म तं ना (ग) धनं तं व नं पा नं मा द क पू त्रि तं अ र य व न दं स या य स या द नं वि ह
 न न म ना ह नं स ख त नं ह नं व ना र्थ न म ॥ ॐ ति ह न म्वा च न म ॥ अथ वे षू वा च न म ॥

सा हार न ग द्य का लि के

श्री हरि डा ग (ल) न म नु ॥ ४ ॥ ॐ हूं (स्मै) डां ग न प न य

क म द रू स र्व व न यं स रू प ३ ॥ ४ ॥

श्री हनि डा ग (ल) न म नु ॥ ॐ हूं (स्मै) डां ग व प न यी व न द र स र्व व न यं स रू
 प स रू प ३ ॥ ४ ॥

१ नमः श्रीगणेशाय स्वष्ट्यस्तु देवनाथे नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
लिंगमचन धनकाङ्क्ष निश्चयकर्मयाय ॥ ॥ क्रापीताहायापजायाय ॥
नमः ॥ अष्टाय रुद्र ॥ ॐ तिक नागै न्यास अंग न्यास ॥ ॐ श्री हृदयाय न
मः ॥ अर्काय विन सखाहा ॥ रुद्र वयालि निमिषाय वषट् ॥ हूँ क
ववाय हूँ ॥ हाने प्रयाय वीषट् ॥ नमः ॥ अष्टाय रुद्र ॥ धनकना
ग न्यास ॥ गहापासु रुद्र यज्ञ विन न वा य ॥ गहापापजायाय
कलपाय ॥ स्वर्गगर्भ हा हृदयाय नमः ॥ ह्रीं विन सखाहा ॥

ह्रीं निषाये वषट् ॥ हूँ कववाय हूँ ॥ हाने प्रयाय वीषट् ॥
हूँ अष्टाय रुद्र ॥ चन्दनाकृत पूष्पं नमः ॥ साधनयाय ययै ॥
त्रयं १० वं १० धनयानि मूर्धा द (मृग) ॥ ॥ आचम्य ॥ न
अस्मत्तत्वाय स्वाहा ॥ कीविद्या तत्वाय स्वाहा ॥ सोमि वत स्वा
य स्वाहा ॥ ॥ अथ आसन पूजा ॥ अस्तु मंगलशङ्क ॥ शिवाय वृद्धा
ष्टुद न चतुन सुखाद गगूल लं विलिष्य ॥ चन्दनाकृत पूष्प आ
सन सगय ॥ न्यास मिषि बुद्धन ॥ ॐ अस्य श्री आसन मंगलपु

धिवात्रिषिसिन्धुसिभनूपृष्ठमखकुमादवगायेदृदिहुंविऊं
 हीनकशुभीकीलकंममत्रासनापवस्यविनीयागः॥हुंजष्टाय
 रुट्॥नर्वकत्रांगन्यास॥आसनध्यान॥धनयंतसत्त्वनूपंक
 नुनपत्रहारिना॥नित्रालम्कम्किताम्कम्कितमवस्यनदधः।
 पृथ्वीत्वयाधृतालाकाद्वित्वंविष्णुनाधृता।स्वीवधनयमोद
 दिपविष्णुनागनसथियाडाध्वसिलाकवान॥कुन्वासन॥
 फर्मनूपं॥नाध्वयममिवासनदवर्गाविस्वधनधरापृथ्वीप

पृथक् कथितं मया ॥ शिरीषाङ्गुली जनेहीं श्रीं सर्वसक्ति कमनासनाय
 नमः ॥ ३ ॥ षष्ठ्यङ्गनपूजा आवाहस्तोत्रं चन्दनाङ्गुली नमः ॥
 यं ३ त्रं ३ वं ३ धन्यानिर्लिङ्गमूद्रादर्थ ॥ आसनसवान ॥ ॥ त्रय
 ल्यादि ॥ श्री ३ स्वस्त्यङ्गुली दवगायानिष्कर्म दवार्वनपञ्चापवात्रपू
 जानिमित्यार्थ कर्त्ता श्रीमार्कन्दमहादेववायसाक्षिनिश्रीसूर्याय
 नमः ॥ ३ ॥ त्रयं चन्दनाङ्गुली नमः ॥ आवमनयाय ३ ॥ त्रैलोक्यमन
 त्वाय स्वाहा ॥ श्रीविद्याय स्वाहा ॥ श्रीनिवृत्तत्वाय स्वाहा ॥ ॥

विद्यादिसकलसिद्धिप्रापयसर्वमनुमयीमाहकाश्रीमहाविपत्र
सुन्दरीप्रापयन्यसविनियोगः॥उंकीं श्रीं कूं रूं गूं दूं दूं जूं श्रीं महादेका
सुत्रस्वती अगुष्टायां नमः॥उंकीं श्रीं ॐ वूं रूं मूं ॐ ॐ श्रीं माहकासु
त्रस्वती गुरुनीत्यां नमः॥उंकीं श्रीं उं टं ॐ उं रूं दूं दूं श्रीं माहकासुत्रस्वती
मध्यमायां नमः॥उंकीं श्रीं उं तं थं दूं दूं नूं श्रीं माहकासुत्रस्वति जना
मिकायां नमः॥उंकीं श्रीं उं पं रूं वं रूं मूं श्रीं माहकासुत्रस्वति कनि
ष्ठायां नमः॥उंकीं श्रीं जूं यं तं लूं वं सूं षूं हूं ॐ श्रीं माहकासुत्रस्व

ति कत्रतत्रकत्रपुष्टायां नमः॥उवं दूं दयादिध्यायत॥पं वा सें दूं
त्रपाकु कपदी लालि रूष धर्म॥उं दूं रू टिक संकासां उं शुं कीं मविना जित्ती
मूकात्रलसुत्र रूपां रुपमालाकमंधुलं॥विशुक्तिं वत्र नन ॐ पस्क
दपत्रमं वीं त्रिं॥उवं ध्यात्वा मानसा पत्रात्रः संपद्य॥विधायक
न्यसतु॥उंकीं श्रीं कूं रूं रूं रूं रूं व्यापकां नमः दक व ॥ ॐ श्रीं
वामदेव॥उं नमः दक व ॥ ॐ नमः सितगि॥श्रीं नमः मूरुगविल्य॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥

व प्रसिद्धि कला की ॥
 शिष्ट प्रवेक नमस्वाहा ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 क (६४) ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 म वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५

श्री कौंभे स्वाहा ॥ श्री प्रियतसून्दर्य ॥ सताक्ष तामहाम ॥ ॥ ॥

ॐ श्रीं कुबेराय नमः ॥ स्वाहा ॥

ॐ ऐं सिद्धिं की महा चतु का पालिनि देहं क तालिं की देहं महा कालि की स्त्री
 निर्वी ॥ ४४ ॥ पत्री ॐ नमः ४ पत्रा ४१ की कालि रूप च च के ४ च नी र्वं महा काल
 त्राणी सां फ्रां सुं दुीं की म १ ला पत्र म ह सि नि थी थी थी सुं सुं वि हीं सि
 ति देहं सी हा न २ सुं अनारव्य रू ता सा र्वं सुं गु अ कालि रू रू रू रू
 नमस्वा हा ४॥ ॥ मूल सता द्वा त्री महा विद्या ॥ ७॥ निर्य क र्म गम क
 यी हा ता स अ या ५ नि २५ उप तान्क म दा पत्र म ल्प ॥ ७॥ ॥
 नैं कीं श्रीं स्त्रीं सौं ॥ अथ निर्वी ॥ १॥ ॥ सुं ॥ सुं ॥ नैं सुं सर्वाधि
 कार पादु की ॥

सुं निर्वी ॥ ४४ ॥ त्र महा रै त वा न न द ना थ कीं श्रीं निर्वी ॥ ४४ ॥ पत्री ४४
 की सहि ता य पादु की ॥ नैं १ ॥ १ ॥ दे दे दे सुं सफ का र ४४ पत्री
 महा म नु सुं त्रै लो क महा म लु अं कू ॥ ५॥ य निर्वी पत्रा म्वा
 हा हा ॥ ५॥ सुं य निर्वी ॥ ५॥ ॥ अथ मा ५॥ य निर्वी ॥ ५॥ ॥
 दक्षि मा मा य वुं निर्वी ॥ ५॥ ॥ सुं सर्वाधि कार श्री पादु की ॥
 सुं सुं ॥ १०॥ मल ॥

नैदीं श्रीं सुं श्रीं श्रीं श्रीं महानिर्वाहः ॥ ४५ ॥ गायन नन्नाथाय ॐ श्रीं
 ४१ की सहिताय ॥ ४६ ॥
 इकाः ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥
 ॥ ६२ ॥
 ॥ ६३ ॥
 ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥
 ॥ ६७ ॥
 ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥
 ॥ ७० ॥
 ॥ ७१ ॥
 ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥
 ॥ ७७ ॥
 ॥ ७८ ॥
 ॥ ७९ ॥
 ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥
 ॥ ८३ ॥
 ॥ ८४ ॥
 ॥ ८५ ॥
 ॥ ८६ ॥
 ॥ ८७ ॥
 ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥
 ॥ ९० ॥
 ॥ ९१ ॥
 ॥ ९२ ॥
 ॥ ९३ ॥
 ॥ ९४ ॥
 ॥ ९५ ॥
 ॥ ९६ ॥
 ॥ ९७ ॥
 ॥ ९८ ॥
 ॥ ९९ ॥
 ॥ १०० ॥

ॐ श्रीं ॥ स्वाहा ॥ सफ दसि ॥ अथ उद्गात्नायमंत्रः ॥ १ ॥
 ॐ श्रीं ॥ गुन विद्या देवी प्रियं त्रिनिर्वाहः ॥ २ ॥
 ॐ श्रीं ॥ वाय नन्नाथाय ॐ श्रीं निर्वोहः ॥ ३ ॥
 ॐ श्रीं ॥ ति उद्गात्नाय ॥ ४ ॥
 ॐ श्रीं ॥ गेलाळ मन्त्र महाकू ॥ ५ ॥
 ॐ श्रीं ॥ यधी महि तन्ना ॥ ६ ॥
 ॐ श्रीं ॥ मस्यधी मही गमा ॥ ७ ॥

१ ओं हं साय विष्णो हं सः सो हं धी महि त न्नो त स्व प्र चो द या त् ॥ ॐ हं सः परम
हं सः वृ ह्ना ॐ त स्मै त त्व म स्य ॐ हं सो हं सः त त्व म मी अ हं वृ ह्ना स्मै वा हं
वृ ह्ना त त्व म मी सो हं परम हं सः ॥ इति ध्यानी ॥ मंत्र ॥ हं सो हं स परम हं स चिन्म
यं सच्चिदानंद स्वरूपं सो हं वृ ह्ना ॥ ॐ नमो नारायणाय ॥ इति मंत्र ॥ ॥
अ ती थि वाल क ष्वै व रा जा भा र्या त धे व च श्रा ति ना ति न जा न ती
दे हि २ पु न र

ॐ नमो नारायणाय ॥ इति मंत्र ॥ ॥

ॐ नमो नारायणाय ॥ इति मंत्र ॥ ॥

ॐ नमो नारायणाय ॥ इति मंत्र ॥ ॥

ॐ नमो नारायणाय ॥ इति मंत्र ॥ ॥